LOK SABHA

Monday, 2nd April, 1956

The Lok Sabha met at Half Past Ten of the Clock.

[MR. SPEAKER *in the Chair*]

ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

सह-अस्तित्व सम्बन्धी साहित्य

*१०४२ **श्री एम० एल० द्विवेदी** : क्या **प्रधान मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि क्या सरकार ने शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व के सिद्धान्तों के विश्लेषण और प्रतिपादन, आदि पर प्रकाश डालने के लिये पुस्तकें तैयार करने के किसी प्रस्ताव पर विचार किया है ?

वैदेशिक कार्य उपमंत्री (श्री अनिल के० चन्दा) : सरकार ने ऐसी कोई पुस्तक या प्रकाशन तैयार नहीं की, जिसमें पंचशील के सिध्दान्तों का खास तौर से विश्लेषण या प्रतिपादन किया गया हो । लेकिन, कुछ ऐसी पुस्तिकायें प्रकाशित की गई हैं जिनमें इन सिध्दान्तों का जिक्र किया गया है ।

श्री एम० एल० द्विवेदी : क्या यह सच है कि बांडुंग म जो कानफरेंस हुई थी उस सिलसिले में इंडोनीशिया की सरकार ने कुछ प्रकाशन निकाले हैं । मैं जानना चाहता हूं कि क्या भारत सरकार ने इस बात को उचित नहीं समझा कि इन सिद्धान्तों के प्रचार के लिये उसे कुछ प्रकाशन करने चाहियें ?

प्रधान मंत्री तथा वैदेशिक कार्य मंत्री (श्री जवाहरलाल नेहरू) : मुझे मालूम नहीं कि इंडोनीशिया की सरकार ने इस बारे में क्या निकाला है । जो बांडूंग कानफरेंस हुई थी उसमें पंचशील का नाम नहीं लिया गया था बल्कि दस बातें लिखी गई थीं, जिनको कभी-कभी वह दश शील कहते हैं । उनमें पंचशील भी शामिल है, यह बात सही है । मुझे इल्म नहीं कि वहां क्या निकाला गया है, लेकिन सवाल का जवाब यह है कि इसके ऊपर विशेष रूप से कोई पुस्तक नहीं लिखी गई है । हां, इसकी चर्चा हमारी बहुत सी किताबों में जरूर है ।

श्री एम० एल० द्विवेदी : मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या इस बात को ध्यान में रखते हुए कि पंचशील का प्रचार हमारे देश के अलावा विदेशों में भी हो रहा है, यह महसूस किया जा रहा है कि इस सम्बन्ध में विस्तार पूर्वक कुछ प्रकाशन निकाले जायें ? क्या भारत सरकार इस पर विचार करेगी ?

श्री जवाहरलाल नेहरू : मैंने इसका साफ जवाब दे दिया है कि इसका हमारी किताबों में जिक्र है । यह अजीब ख्याल है प्रचार का । प्रचार लाठी ले कर नहीं होता है । इस तरह के प्रचार की तो कूछ मग्ज लोगों के लिये जरूरत होती है । प्रचार का एक तरीका होता है । वह डाइरेक्ट (प्रत्यक्ष) भी होता है और इंडाइरेक्ट (अप्रत्यक्ष) भी होता है, शरीफाना तरीके से होता है । उसका यह तरीका नहीं होता कि एक ख्याल को हवा में छोड दिया और उसको पकड लिया गया । उसके और तरीके होते हैं । यह तरीका नहीं होता कि इसे स्विकार करो नहीं तो लाठी सिर पर पडेगी ।

सेठ गोविन्द दास : प्रचार का अभी माननीय प्रधान मंत्री जी ने विश्लेषण किया कि वह किस तरह से होता है । क्या प्रधान मंत्री जी इस बात को मानते हैं कि इस प्रकार के प्रचार के लिये यदि संगीत नाटक अकादमी और सरकार का प्रचार विभाग को जो मंत्रालय है, वह इस प्रकार का ललित साहित्य प्रकाशित करें व्याख्यानों के रूप में नहीं, तो उससे इस देश में और विदेशों में इन सिद्धान्तों का बहुत अच्छी तरह से प्रचार किया जा सकता है ।

Mr. Speaker : It is a suggestion for action.

TECHNICAL LIBRARY ON ATOMIC ENERGY DEVELOPMENTS

***1043. Shri Keshavaiengar** : Will the **Prime Minister** be pleased to state :

(a) the value of the technical library of research reports on Atomic

energy developments presented to India;

(b) the location of the library; and

(c) whether all scientists from the States in India as well as foreign scientists have access to these reports?

The Prime Minister and Minister of External Affairs (Shri Jawaharlal Nehru): (a) Under a thousand dollars.

(b) In the library of the Atomic Energy Establishment at Bombay.

(c) All interested scientists will be permitted access to the library.

Shri Keshavaiengar: May we know if any attempt has been made to find out any reference to this in any of our ancient literature in our oriental libraries?

Shri Jawaharlal Nehru: Is he enquiring if there is any reference to atomic knowledge in our ancient literature?

Shri Keshavaiengar: Yes.

Shri Jawaharlal Nehru: I am not aware of it.

Shri Wodeyar: May I know whether Government are considering the establishment of atomic schools where this technical literature will be located and students also will be taught?

Mr. Speaker: It refers to library and that refers to school.

Shri T. S. A. Chettiar: May I know whether literature like this will be put in our universities so that progressive scientists may get in touch with this literature?

Shri Jawaharlal Nehru: Of course. These subjects are taught and should be taught in every university—that is, basic knowledge of physics and then comes higher physics and then other specialisation. Every university should have a library—proper library—and also every institute. The question was about a particular gift of one set of books that was put in one place.

KHADI

***1044. Shri Dabhi:** Will the Minister of **Works, Housing and Supply** be pleased to refer to the reply given to Starred Question No. 740 on the 12th December, 1955 and state:

(a) the exact price preference given to Khadi for Government cloth requirements; and

(b) the concession given to Khadi in the matter of quality?

The Parliamentary Secretary to the Minister of Works, Housing and Supply (Shri P. S. Naskar): (a) and (b). A statement is placed on the Table of the Lok Sabha [*See* Appendix VI, annexure No. 9]

Shri Dabhi: How many rupees worth khadi was purchased? How many rupees worth of cloth other than khadi was purchased in 1954-55 and what is the order for 1955-56?

Shri P. S. Naskar : In 1954-55, khadi to the value of Rs. 28·78 lakhs was purchased and in 1955-56 the value was—for the first ten months from 1-4-1955 to 31-1-1956—Rs. 87·57 lakhs.

Shri Dabhi : I asked about non-khadi also.

Shri P. S. Naskar: I require notice for the latter part of the question.

Shri Dabhi : May I know how much khadi is likely to be purchased during 1956-57?

The Minister of Works, Housing and Supply (Sardar Swaran Singh) : It is very difficult to give that estimate at the moment. We find out what is the capacity of the Village and Khadi Industries Board to make the supplies. We have taken practically their entire capacity.

सेठ गोविन्द दास : माननीय मंत्री जी ने इसी प्रकार के एक प्रश्न के उत्तर में पहले कहा था कि सरकार के कुछ ऐसे विभाग और हैं जिनमें खादी के चलन की व्यवस्था की जाने की बात सोची जा रही है । क्या मैं जान सकता हूं कि गवर्नमेंट के और ऐसे कितने विभाग हैं जिनमें इस वर्ष खादी खरीदी जायगी ?

सरदार स्वर्णसिंह : ऐसी कोई लिस्ट तैयार नहीं की गयी है ।

CITIZENSHIP OF INDIANS OVERSEAS

***1045. Shri Krishnacharya Joshi:** Will the **Prime Minister** be pleased to